Q→ शंकर के आत्मा विचार की व्याख्या करें?

Ans→ शंकर के अनुसार ब्रह्म व आत्मा में पूर्ण अभेद है, क्योंकि आत्मा, ब्रह्मस्वरूप तथा ब्रह्म, आत्मस्वरूप है अर्थात् ब्रह्म या आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप है। ब्रह्म के समान ही आत्मा सत्, चित् तथा आनंद स्वरूप है। वस्तुतः सत्, चित् तथा आनंद तीन न होकर एक है। इनका विविध निर्वचन बुद्धि का कार्य है, जो सत् है वही चित् है और वही आनन्द है। पारमार्थिक दृष्टि से एकमात्र ब्रह्म की सत्य है तथा यह ब्रह्म ही आत्मा है।

शंकर ने उपनिषदों को आधार बनाकर ही अपने दर्शन में ब्रह्म व आत्मा के बीच पूर्ण अभेद का प्रतिपादन किया, क्योंकि उपनिषदों में जो कहा गया है उस पर संदेह नहीं किया जा सकता क्योंकि वे प्रमाण है। उपनिषदों में ब्रह्म व आत्मा के बीच पूर्ण अभेद को चार महावाक्यों द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है, जो निम्नलिखित है—

1. वह तू है।

2. मैं ब्रह्म हूँ।

3. यह आत्मा ब्रह्म है।

4. ब्रह्म ज्ञान स्वरूप है।

शंकर के अनुसार उपरोक्त महा-वाक्यों में 'वह' ब्रह्मवाचक तथा 'तू' आत्मवाचक है। यहाँ प्रथम महावाक्य 'वह तू है' से आशय है कि आत्म ब्रह्म है। तृतीय महावाक्य 'यह आत्मा ब्रह्म है' से आशय है कि आत्मा तथा ब्रह्म में तादात्म्य है। चतुर्थ महावाक्य 'ब्रह्म ज्ञान स्वरूप है' से आशय है कि यह आत्मा ब्रह्म स्वरूप है।

शंकर के अनुसार एक मात्र परम सत्ता ब्रह्म ही है। उपनिषदों में ब्रह्म के दो रूपों का वर्णन मिलता है —

(1) अपर ब्रह्म — सगुण ब्रह्म
सगुण
सविशेष
सविकल्पक
सोपाधिक
→ इसी को ईश्वर कहा गया है।

(1) निर्गुण ब्रह्म – पर ब्रह्म
निर्विशेष
निराकार
निर्विकल्पक
निरुपाधिक
निष्प्रपञ्च
अनिर्वचनीय
अपरोक्षानुभूतिगम्य

ब्रह्म सर्वभेदरहित है। ब्रह्म पारमार्थिक सत्ता है। ब्रह्म विरोधरहित है – (विरोध दो है – प्रत्यक्ष एवं सम्भावित विरोध) ब्रह्म व्यक्तित्व से शून्य है। ब्रह्म सच्चिदानंद (सत्, चित्, आनंद) है।